“परन्तु संकट के समय वे कहते हैं: ‘उठ और हमें बचा!’”

क्या आपने कभी ऐसे लोगों को देखा है जो आपसे केवल तभी संपर्क करते हैं जब उन्हें किसी सहायता की आवश्यकता होती है? न वे हाल-चाल पूछते हैं, न संबंध बनाए रखते हैं। जब तक सब ठीक रहता है, वे दिखाई नहीं देते; लेकिन जैसे ही संकट आता है, वे तुरंत आ जाते हैं। और जैसे ही उनकी समस्या हल होती है, वे फिर गायब हो जाते हैं—अगली परेशानी तक।

यह अच्छा नहीं लगता, है न?

अब ज़रा सोचिए, जब लोग परमेश्वर के साथ भी ऐसा ही व्यवहार करते हैं, तो परमेश्वर को कैसा लगता होगा।

आज बहुत से लोगों का परमेश्वर के साथ संबंध इसी प्रकार सतही हो गया है। वे प्रतिदिन उसे नहीं खोजते, न प्रार्थना करते हैं, न वचन पढ़ते हैं, और न ही उसके अनुसार जीवन जीते हैं। परन्तु जैसे ही परेशानी आती है—बीमारी, आर्थिक तंगी, पारिवारिक संकट—वे अचानक परमेश्वर को याद करते हैं और सहायता के लिए पुकारते हैं।

यह कोई नई बात नहीं है। परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यिर्मयाह के द्वारा बहुत पहले इसी बात को उजागर किया था:

“वे वृक्ष से कहते हैं, ‘तू मेरा पिता है,’

“परन्तु संकट के समय वे कहते हैं: ‘उठ और हमें बचा!’”

और पत्थर से, ‘तूने मुझे जन्म दिया है।’
क्योंकि उन्होंने मेरी ओर मुख नहीं, परन्तु पीठ फेर ली है; परन्तु अपने संकट के समय वे कहते हैं,
‘उठ और हमें बचा।’”
(यिर्मयाह 2:27)

यहाँ परमेश्वर दिखाता है कि उसकी प्रजा ने उसे छोड़कर मूर्तियों को अपना लिया था, फिर भी जब विपत्ति आई तो वे उससे उद्धार की अपेक्षा करने लगे। यह ढोंग की तस्वीर है—दैनिक जीवन में परमेश्वर को नज़रअंदाज़ करना, परन्तु आपदा में उसे पुकारना।

दुख की बात यह है कि आज बहुत से विश्वासियों की स्थिति भी ऐसी ही हो गई है। प्रार्थना अंतिम विकल्प बन गई है। आराधना कभी-कभी होती है और वह भी स्वार्थ से भरी हुई। पवित्रशास्त्र पढ़ना बहुत कम हो गया है। लोग परमेश्वर को उसके स्वरूप के लिए नहीं, बल्कि उसके कामों के लिए खोजते हैं।

सच्चा संबंध बनाम धार्मिक सुविधा

परमेश्वर को केवल रीति-रिवाज नहीं, बल्कि सच्चा संबंध चाहिए। वह चमत्कार देने वाली कोई मशीन नहीं है। यीशु ने इसे बहुत

“परन्तु संकट के समय वे कहते हैं: ‘उठ और हमें बचा!’”

स्पष्ट शब्दों में कहा:

“जो मुझ से कहता है, ‘हे प्रभु, हे प्रभु,’ वह स्वर्ग के राज्य
में प्रवेश नहीं करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता
की इच्छा पर चलता है।
उस दिन बहुत से लोग मुझ से कहेंगे, ‘हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माएँ नहीं निकालीं, और तेरे नाम से बहुत से
सामर्थ्य के काम नहीं किए?’
तब मैं उनसे कह दूँगा, ‘मैं तुम्हें कभी नहीं जानता था; हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ।’”
(मत्ती 7:21–23)

यह वचन नास्तिकों के विषय में नहीं है, बल्कि धार्मिक लोगों के विषय में है—जो बाहर से तो आत्मिक कार्य कर रहे थे, परन्तु उनके पास यीशु के साथ सच्चा संबंध नहीं था। वे उसके नाम का उपयोग तो कर रहे थे, पर उसके प्रभुत्व के अधीन नहीं जी रहे थे।

अवज्ञा पर परमेश्वर आशीष देने के लिए बाध्य नहीं है

सच कहें तो, केवल आवश्यकता पड़ने पर परमेश्वर को खोजना विश्वास नहीं, बल्कि आत्मिक स्वार्थ है। यह परमेश्वर को प्रभु मानने के

“परन्तु संकट के समय वे कहते हैं: ‘उठ और हमें बचा!’”

बजाय एक विकल्प के रूप में उपयोग करना है। ऐसी सोच आशीष की ओर नहीं, बल्कि न्याय की ओर ले जाती है।

यिर्मयाह 2:28–29 में परमेश्वर इस झूठी धार्मिकता का उत्तर देता है:

“तेरे बनाए हुए देवता कहाँ हैं?
यदि वे तेरे संकट के समय तुझे बचा सकते हैं,
तो वे उठें और तुझे बचाएँ!
क्योंकि जितने तेरे नगर हैं,
उतने ही तेरे देवता हैं, हे यहूदा।
तुम मुझ से क्यों विवाद करते हो?
तुम सब ने मेरे विरुद्ध अपराध किया है,”
यहोवा की यह वाणी है।
(यिर्मयाह 2:28–29)

परमेश्वर यह नहीं चाहता कि हम अंधविश्वास, धार्मिक वस्तुओं, या बाहरी रस्मों पर निर्भर रहें। वह हमारा हृदय चाहता है।

उद्धार एक दैनिक जीवन-यात्रा है

“परन्तु संकट के समय वे कहते हैं: ‘उठ और हमें बचा!’”

सच्चा विश्वासी केवल संकट से छुटकारा पाने के लिए परमेश्वर को नहीं खोजता, बल्कि हर दिन उसकी उपस्थिति में जीवन जीता है—चाहे सुख हो या दुःख। परमेश्वर केवल संकट में उद्धारकर्ता नहीं है; वह हर दिन का प्रभु है।

“तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन,
और अपने सारे प्राण,
और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।”
(व्यवस्थाविवरण 6:5)

यह प्रेम शर्तों पर आधारित नहीं है। यह प्रार्थनाओं के उत्तर या समृद्धि पर निर्भर नहीं करता। यह उसे जानने और हर परिस्थिति में उसके साथ चलने पर आधारित है।

हमें क्या करना चाहिए?

हमें सच्चे विश्वास की ओर लौटना होगा—ऐसे विश्वास की ओर जो हर परिस्थिति में परमेश्वर का आदर करता हो।

प्रतिदिन परमेश्वर को खोजें, केवल आपातकाल में नहीं।
उसके वचन को नियमित रूप से पढ़ें (दिन में 20 मिनट से भी शुरुआत करें)। ईमानदारी से प्रार्थना करें—केवल माँगने के लिए नहीं, बल्कि उसे जानने के

“परन्तु संकट के समय वे कहते हैं: ‘उठ और हमें बचा!’”

लिए।
प्रेम से आराधना करें, केवल कर्तव्य समझकर नहीं।
उसकी आज्ञाओं का पालन करें—क्योंकि “विश्वास यदि कर्मों सहित न हो, तो मरा
हुआ है” (याकूब 2:17)।
केवल उसकी आशीषों के चाहने वाले नहीं, बल्कि उसकी संतान बनने की लालसा रखें।

जब संबंध सही होता है, तो आशीषें अपने आप आती हैं। यीशु ने कहा:

“पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो,
तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।”
(मत्ती 6:33)

समापन प्रार्थना

प्रभु हमारी आँखें खोलें, ताकि हम उसे केवल संकट में बचाने वाला नहीं, बल्कि अपने पिता के रूप में जानें। वह हमारे हृदयों को बदले, ताकि हम प्रतिदिन उसे खोजें। और जब मसीह लौटे, तो वह हमें विश्वासयोग्य पाए—केवल उसके चमत्कारों के लिए नहीं, बल्कि उसके राज्य के लिए तैयार।

शालोम।

“परन्तु संकट के समय वे कहते हैं: ‘उठ और हमें बचा!’”

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp